

DPN 6210

Title : जनक विधि JANAKVA VIDHI

Run. No. 6901

Cat. No.

Micro. No.

Subject Ritual कर्मविधि / विधि Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 13 X 6.5

Folios 16

Lines (in a page) 5/6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 1037

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

1 → यिति जनक विधि समाप्तः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ जनक विधिमाह ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ पञ्च गव्ये जाय ...



15

10

5

Handwritten text in Devanagari script on a palm leaf manuscript. The text is arranged in four lines, with some characters in red ink. The leaf is heavily damaged and stained.

Line 1: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
Line 2: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
Line 3: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
Line 4: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

0 5 10 15 20

माहात्रिह्वर

गणेशाय नमः ॥ रजनक विधिमाह ॥ मन्त्राय

इमं लुनं यं कृगव्यं कायं सिद्धं तस्य मं लुनं

यिने कि तन समाधि कुल यज्ञा सग धनिययी

यूजा, यूजा, विदि, वनिविद्य, कामानियुज

यनजनकया यक्षमूवा नक्षयः गुनूम लुनदन

कविसजन, सिध्याधियासन, निराजन, वज्र तावा

मगरुन नाथ यत्तु गव्यविषयं पञ्चगव्यनगिन के

यथा मृत्तुलि नूनं विरयका हूनं विरय स्वस्ति वा कन

दिगतायावीयः सियनिनसंखलंघनहास्यं स्वधन

मकु ॥ ॥ ॐ श्री ४ सर्वसम्पद धनीय हूं ॥ ॥

दिक्कनायाडाडागत्रसिद्धनसग्याडाथकात्रि
नवाडनयाकाडावदुष्टुकदिगुदडाद्ययाय
॥मंवाभासिक॥ॐस्विस्वाहा॥नकात्रादिनः
सिसादसादकानक रावनायाय॥मंजा॥
ॐसमाधिप्रसक्तजिनंभजनंयूतचिन्तादि

नजंस्वाहा॥ॐस्विस्वाहा॥भासिनक॥सिव
जितत्राज्ञाय॥॥समाधिय॥॥कुयत्रकनरि
क॥थननिसाकुवियमूवानकायक॥थनयनि
त्रद्विय॥निसाननियक॥थनत्रिनमधुनथि
त्रकिंननदिगुसक्तयद्य॥॥दिदि

वनिश्चयवाङ्मय ॥ कात्रियकाश्चय ॥
यनननकुरुनाञ्जिस्सना ॥ मनु ॥ ॥ उंसर्ग
नवद्वीनां आतावनं रंतावनददस्वाद ॥ धीउ
यनरुतासूवायादुआननयथनजागश्चय
॥ ॥ धननिस्थंविद्यंविद्यकराया ॥ ॥ उंका

नायस्वाद ॥ ॥ वनावाक्ता ॥ ॥ उं उदना
यस्वाद ॥ ॥ जगुताक्ता ॥ ॥ उंसमानायस्वा
दा ॥ ॥ दयवाक्ता ॥ ॥ उंयानायस्वाद ॥
यानाक्ता ॥ ॥ उंदिद्यानसमानश्चाननरु
स्वाद ॥ ॥ दायविंसनकायानकारुयासुकता

॥ नासिक ॥ कथय ॥ वयय ॥ स्नानमा
त्रानकवाचक ॥ ॥ रुनाकयवियकावाक ॥
सिद्धनत्रय ॥ ॥ ज्ञासिवान ॥ दडासगांविय
॥ ॥ महनिशुय ॥ विनयका दकुनायका ॥
कुसादिदवकाया ॥ ॥ ज्ञा दूसाय ॥ समयाच

कथाया ॥ ॥ विसरुनयायमदयानात्रडाकय
यिनिरुनकाविधिसमाकडा ॥ ॥

८ वे स ॥ ध्रु
 ८ धा यि न ॥ सि क सि
 ८ शि हा का न ॥ आ रु क सि
 ८ चै त्र का न ॥ पू न
 ८ य ग य नि ॥ कृ हा न
 ८ नि य नि ॥ ज स
 ८ न क ॥ ज न ह

पु न व र्ध न १०३०
 म र्ति ग १०
 शि वि १० वि वा १०
 वा १० व १०
 ज्ञा १० वा १०
 शि वि १० के वा १०
 मा १० व १०
 वा १० मा १०
 व १० स १०
 वि १० व १०
 व १० वा १०

सप्तविंशति

भूतान्तर्गत १००० तात्पर्य श्री श्री श्री
 नृसिंह जी श्री पादा पादक उचोभ
 तपादावसाह्म यगिहोपाधोयमा
 म्मदलनाहु विवेकोलम्बदनेप्रज
 यलेपाकेसादोकेकुनदल अकधा
 उ नदीन्धु चक्री विदे गगोली
 यानपागवापाविदे न्नागोविमर्गहु
 गविदेनो गिभा अहु नदीन धवा
 गहलोक अक. कृभा गविदे न्ना
 के प्रनुनद्विजे ये प्रक धा वे न्ना विनि
 दधु जीक पावा न विदे ग. हु भा विदे
 न्ना विदे न्ना गी विदे न्ना गी विदे
 उवाधक दधिनी प्रकी न्ना उरवा
 गी भा उरवा न्ना क. हु न्ना
 न्ना न्ना उरवा न्ना उरवा न्ना



15

10

5

0

1

10

15

20



15

10

5



11811





15

10

5

0

1

10

15

20

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ

॥८

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ २ ॥
सर्वदुःखहर्त्रा ॥ ३ ॥
सर्वपापहर्त्रा ॥ ४ ॥
सर्वकलहहर्त्रा ॥ ५ ॥
सर्वमोक्षदायक ॥ ६ ॥
सर्वसुखदायक ॥ ७ ॥
सर्वसौख्यदायक ॥ ८ ॥
सर्वसमृद्धिदायक ॥ ९ ॥
सर्वसिद्धिदायक ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १२ ॥
सर्वदुःखहर्त्रा ॥ १३ ॥
सर्वपापहर्त्रा ॥ १४ ॥
सर्वकलहहर्त्रा ॥ १५ ॥
सर्वमोक्षदायक ॥ १६ ॥
सर्वसुखदायक ॥ १७ ॥
सर्वसौख्यदायक ॥ १८ ॥
सर्वसमृद्धिदायक ॥ १९ ॥
सर्वसिद्धिदायक ॥ २० ॥

七

高

何

臣

上房

五

३५

五

२५ का-यं स्वययां धरुन
कि कृटिं कं दं अथ धना
धियका दस दं

